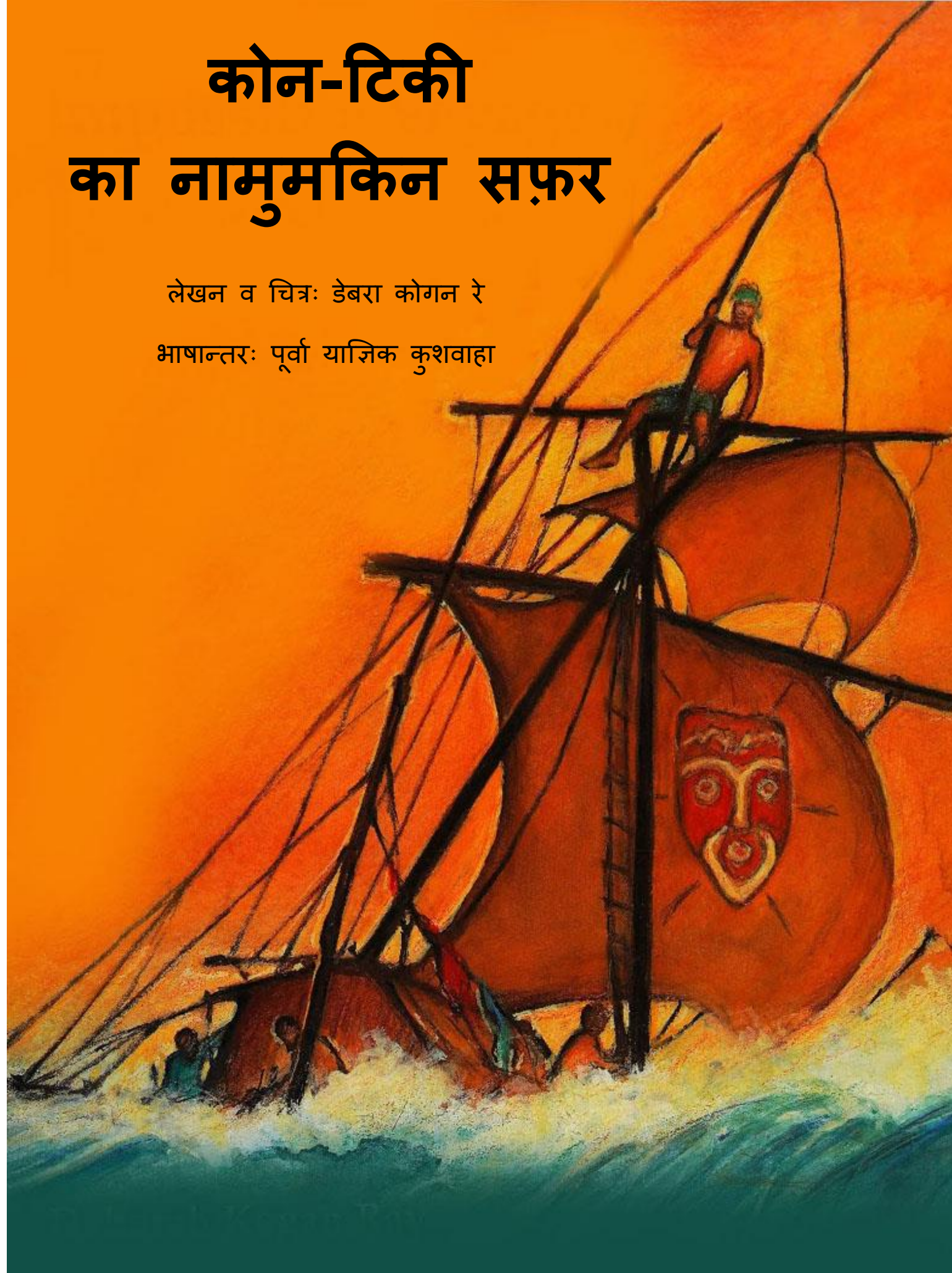


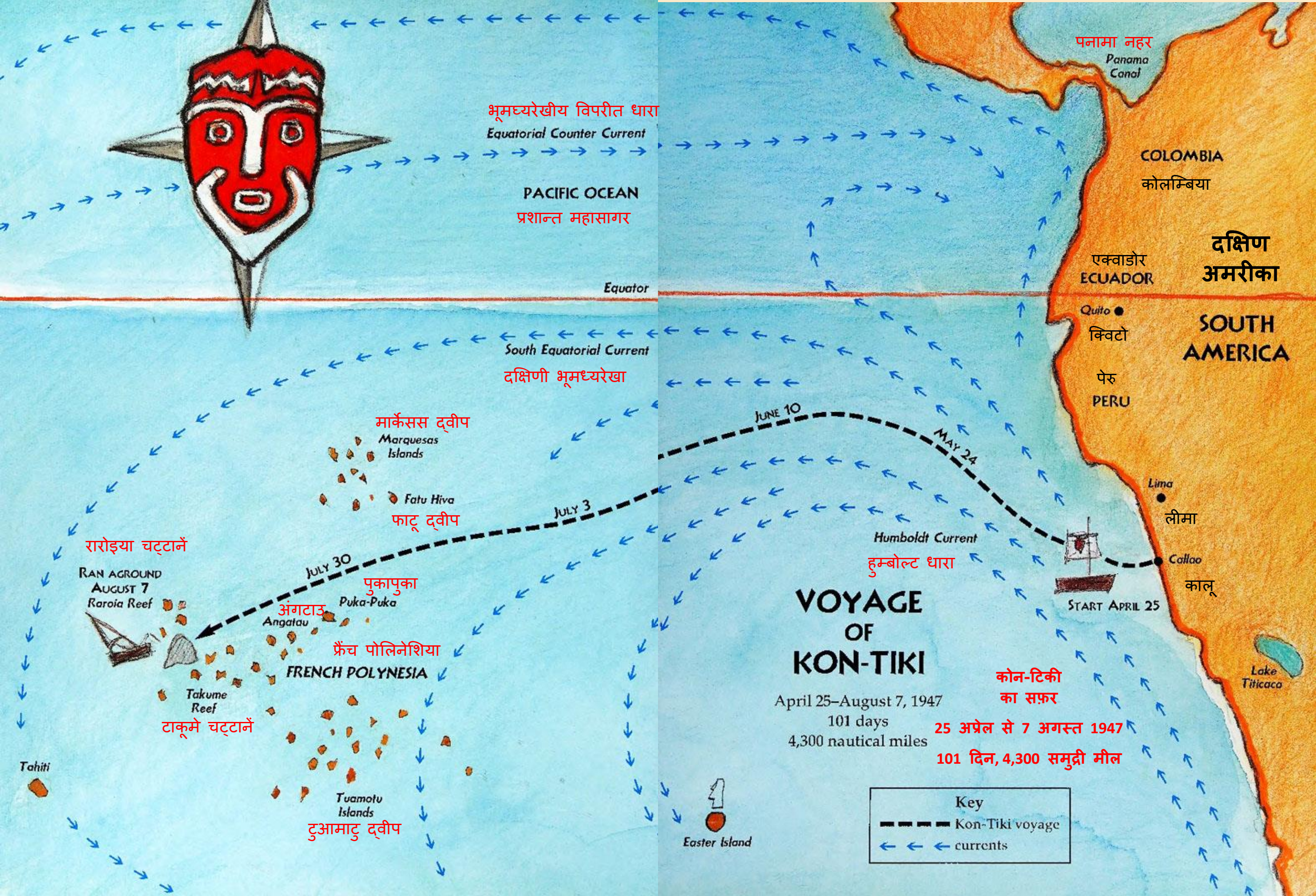
# कोन-टिकी का नामुमकिन सफ़र

लेखन व चित्र: डेबरा कोगन रे

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा









## नामुमकिन!

यही थोर हायरडाल तब सुनते थे, जब वे यह सुझाते कि दक्षिण अमरीका के प्राचीन इन्का लोगों ने एक बेड़े के सहारे प्रशान्त महासागर की दक्षिण दिशा में सफ़र किया था। उनके इस सिद्धान्त पर किसीको यकीन ही नहीं होता था।

सो उन्होंने तय किया कि वे इसे सिद्ध करेंगे। उन्होंने एक दल जुटाया, वे दल समेत पेरु पहुँचे, वहाँ बाल्सा पेड़ तलाशे और उसकी लट्ठों से एक बेड़ा बनाया, ठीक वैसा जैसा प्राचीन इन्का लोग बनाते होंगे। सबने कहा कि बेड़ा डूब जाएगा। पर ऐसा नहीं हुआ। 4,300 समुद्री मील, व 101 दिनों तक सफ़र करने के दौरान थोर और उनका दल समुद्र में निपट अकेला, आँधी-तूफान, तेज़ हवाओं, और डरावनी लहरों के रहम पर रहा।

इस सफ़र के दौरान थोर ने जो दैनंदिनी लिखी थी, उस प्राथमिक स्त्रोत सामग्री को उद्धृत करते हुए लेखिका व चित्रकार डेबरा कोगन रे ने दर्शाया है कि *नामुमकिन* कैसे मुमकिन में तब्दील हो जाता है - दृढ़ संकल्प, घोर श्रम . . . और कुछ खुशकिस्मती से।



The background of the entire page is a painting. On the left, a three-masted sailing ship is depicted, its sails partially set, sailing on a dark, choppy sea. The sky is a vibrant, fiery orange and red, suggesting a sunset or sunrise. The overall mood is dramatic and evocative.

# कोन-टिकी का नामुमकिन सफ़र

लेखन व चित्र: डेबरा कोगन रे  
भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

“एक दिन मेरा सिद्धान्त सिद्ध होगा।  
मुझे इसे पेश करने के लिए अमरीका जाना ही होगा।”  
- थोर हायरडाल, नोर्वेजी नृशास्त्री, 1946

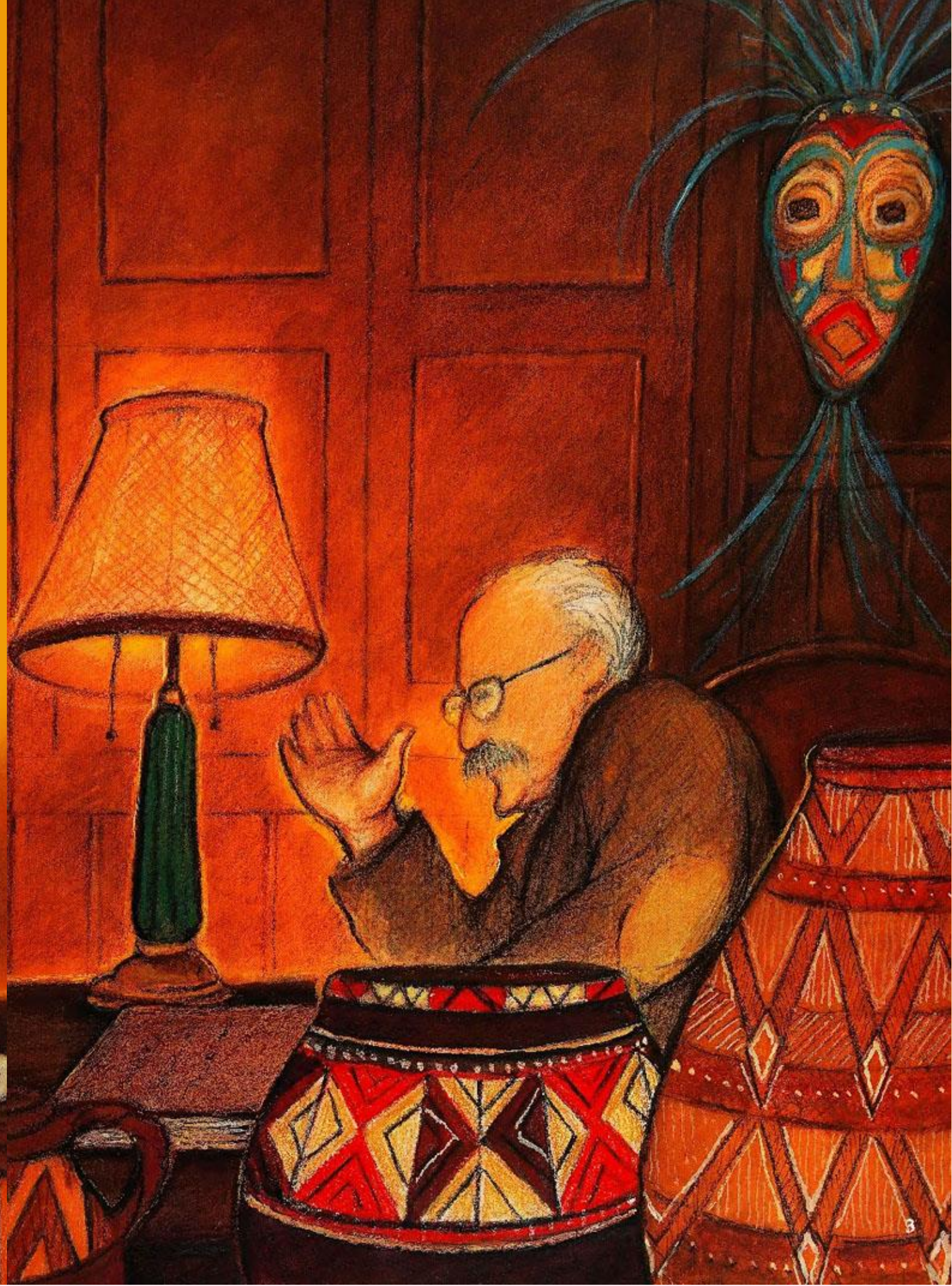
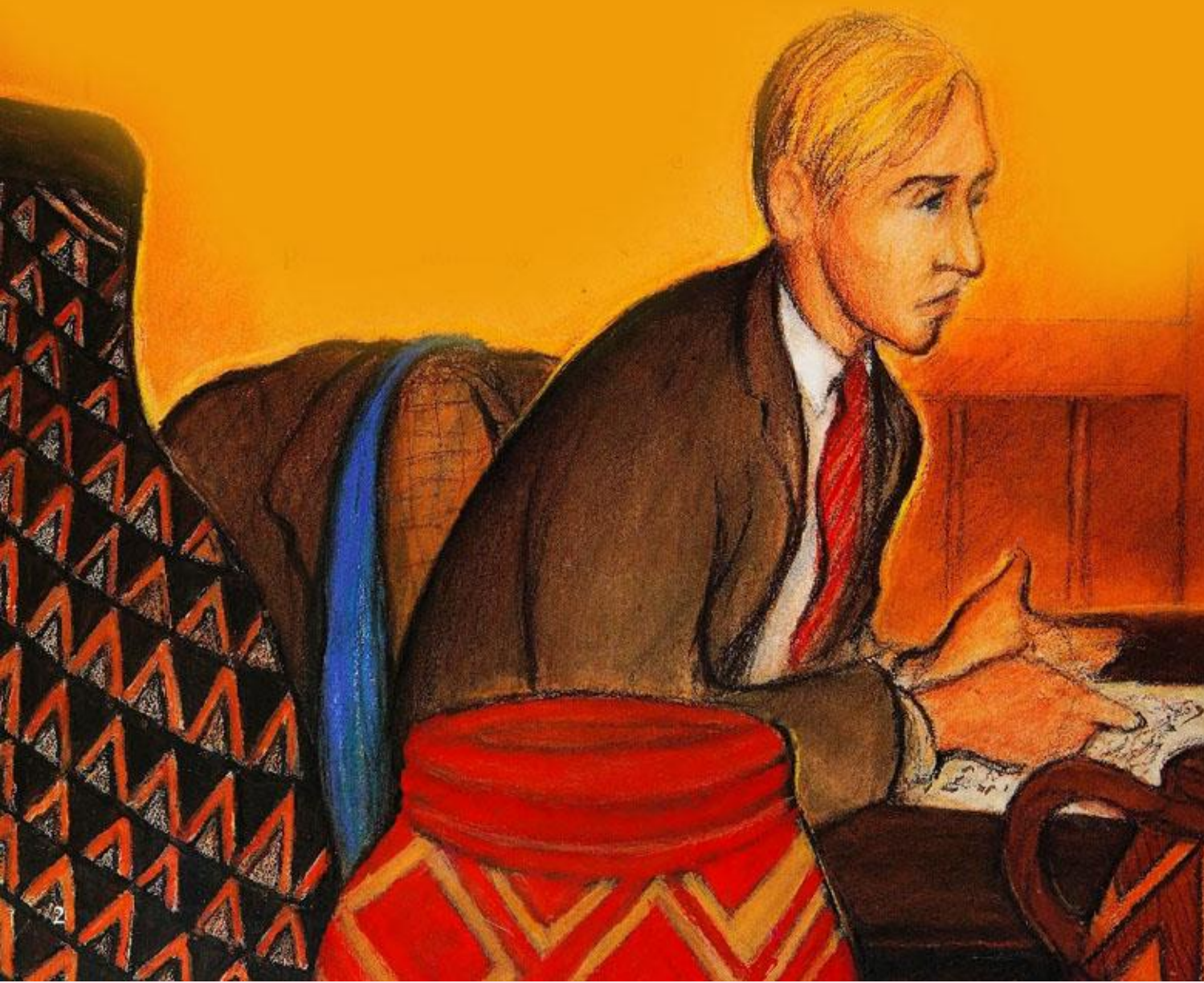


**“मैंने देखा कि कोई मेरे सिद्धान्त को नहीं स्वीकारेगा।”**

“नामुमकिन!” मशहूर प्रोफेसर ने थोर हायरडाल को देख अपना सिर हिलाते कहा।

यह पहली बार नहीं था कि नौजवान नोर्वेजी नृशास्त्री को अपनी शोध परियोजना पर ऐसी प्रतिक्रिया मिली हो। वे न्यू यॉर्क शहर में इस उम्मीद से आए थे कि वहाँ के विद्वान खुले दिमाग से इस संभावना पर विचार करेंगे कि दक्षिण अमरीका के प्राचीन इन्का लोग बेड़े की मदद से प्रशान्त महासागर के दक्षिणी द्वीपों तक पहुँचे थे। पर उनके द्वारा प्रस्तुत प्रमाणों के बावजूद उनके विचारों को महज अटकल कह कर खारिज कर दिया गया।

“यह मुमकिन है सिद्ध करने के लिए क्या आप खुद 4,300 समुद्री मील का सफ़र लट्ठों से बने एक आदिम बेड़े से करना चाहेंगे?” प्रोफेसर साहब ने हंसते हुए पूछा।





## “मेरा इरादा यह साबित करने का है कि यह सफ़र मुमकिन है।”

थोर हायरडाल के सिद्धान्त ने पोलिनेशिया के द्वीप फाटू हीवा में आकार लिया था, जहाँ वे साल भर तक आदिवासियों के साथ रहे थे। द्वीपवासियों ने उन्हें पत्थरों पर उकेरी वे मूर्तियाँ दिखाई थीं जो मिथकीय चरित्र टिकी की कही जाती थीं। किंवदंती के अनुसार टिकी उनके पूर्वजों को समुद्र पार के किसी देश से लाया था।

उकेरी गई ये मूर्तियाँ दक्षिण अमरीका की प्राचीन सभ्यताओं की मूर्तियों से मिलती-जुलती थीं। क्या ये सभ्यताएं किसी तरह एक-दूसरे से संबंधित थीं? थोर ने सोचा। क्या पोलिनेशिया के टिकी और इन्का देवता कोन-टिकी विराकोचा के बीच कोई संबंध हो सकता है? क्या यह मुमकिन था कि प्राचीन नाविक प्रशान्त महासागर को पार कर दक्षिणी समुद्र के द्वीपों तक पहुँचे थे?

इन सवालों पर दस वर्षों तक शोध करने के बाद भी जब थोर को शंका-संदेह का सामना करना पड़ा, थोर को अहसास हो गया कि उन्हें आगे क्या करना होगा।

उन्होंने तय किया कि वे इन्का लोगों की तरह बाल्सा पेड़ के लट्ठों से एक बेड़ा बनाएंगे और उस प्राचीन सफ़र को फिर से अभिनीत करेंगे।



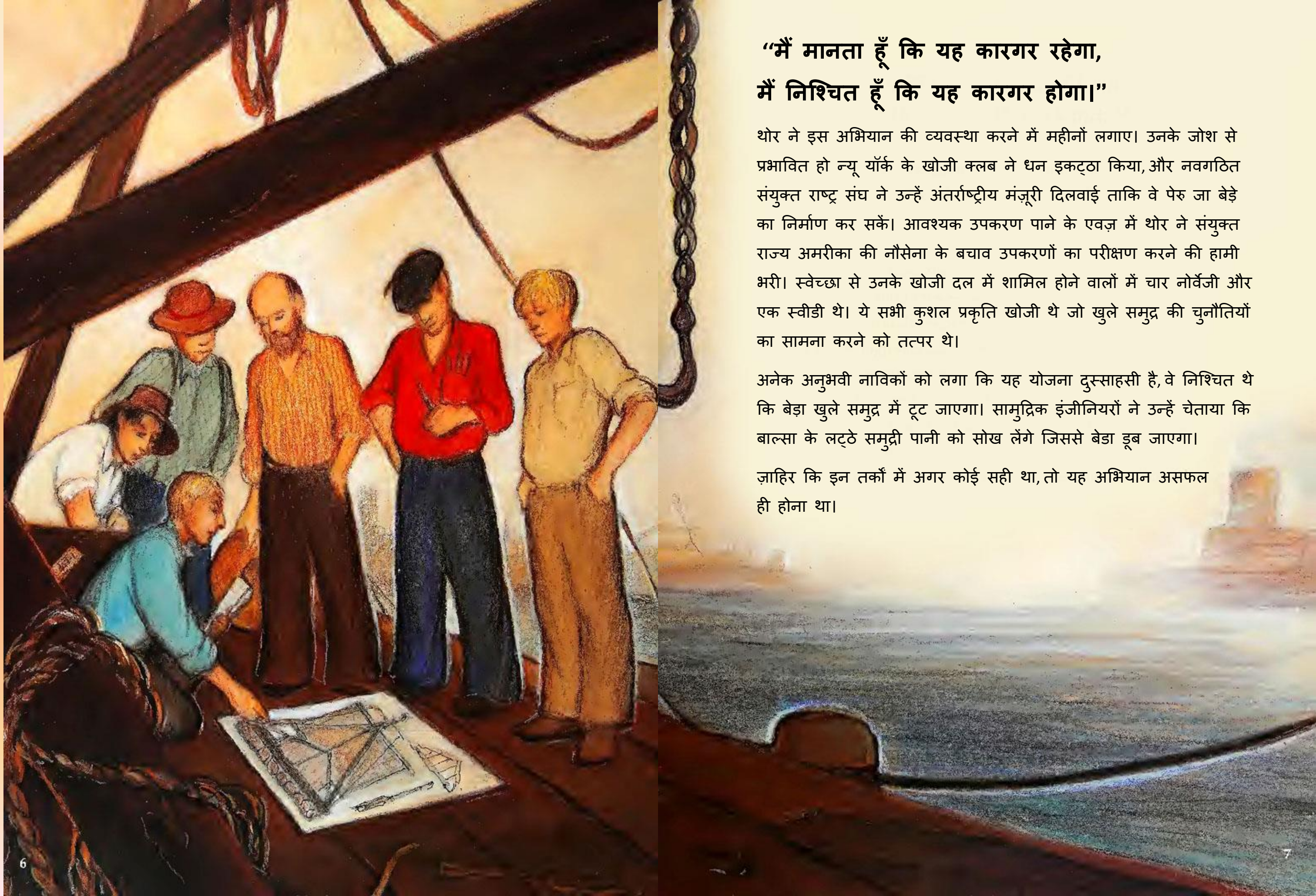


**“मैं मानता हूँ कि यह कारगर रहेगा,  
मैं निश्चित हूँ कि यह कारगर होगा।”**

थोर ने इस अभियान की व्यवस्था करने में महीनों लगाए। उनके जोश से प्रभावित हो न्यू यॉर्क के खोजी क्लब ने धन इकट्ठा किया, और नवगठित संयुक्त राष्ट्र संघ ने उन्हें अंतर्राष्ट्रीय मंजूरी दिलवाई ताकि वे पेरु जा बड़े का निर्माण कर सकें। आवश्यक उपकरण पाने के एवज़ में थोर ने संयुक्त राज्य अमरीका की नौसेना के बचाव उपकरणों का परीक्षण करने की हामी भरी। स्वेच्छा से उनके खोजी दल में शामिल होने वालों में चार नोर्वेजी और एक स्वीडी थे। ये सभी कुशल प्रकृति खोजी थे जो खुले समुद्र की चुनौतियों का सामना करने को तत्पर थे।

अनेक अनुभवी नाविकों को लगा कि यह योजना दुस्साहसी है, वे निश्चित थे कि बेड़ा खुले समुद्र में टूट जाएगा। सामुद्रिक इंजीनियरों ने उन्हें चेताया कि बाल्सा के लट्ठे समुद्री पानी को सोख लेंगे जिससे बेड़ा डूब जाएगा।

ज़ाहिर कि इन तर्कों में अगर कोई सही था, तो यह अभियान असफल ही होना था।



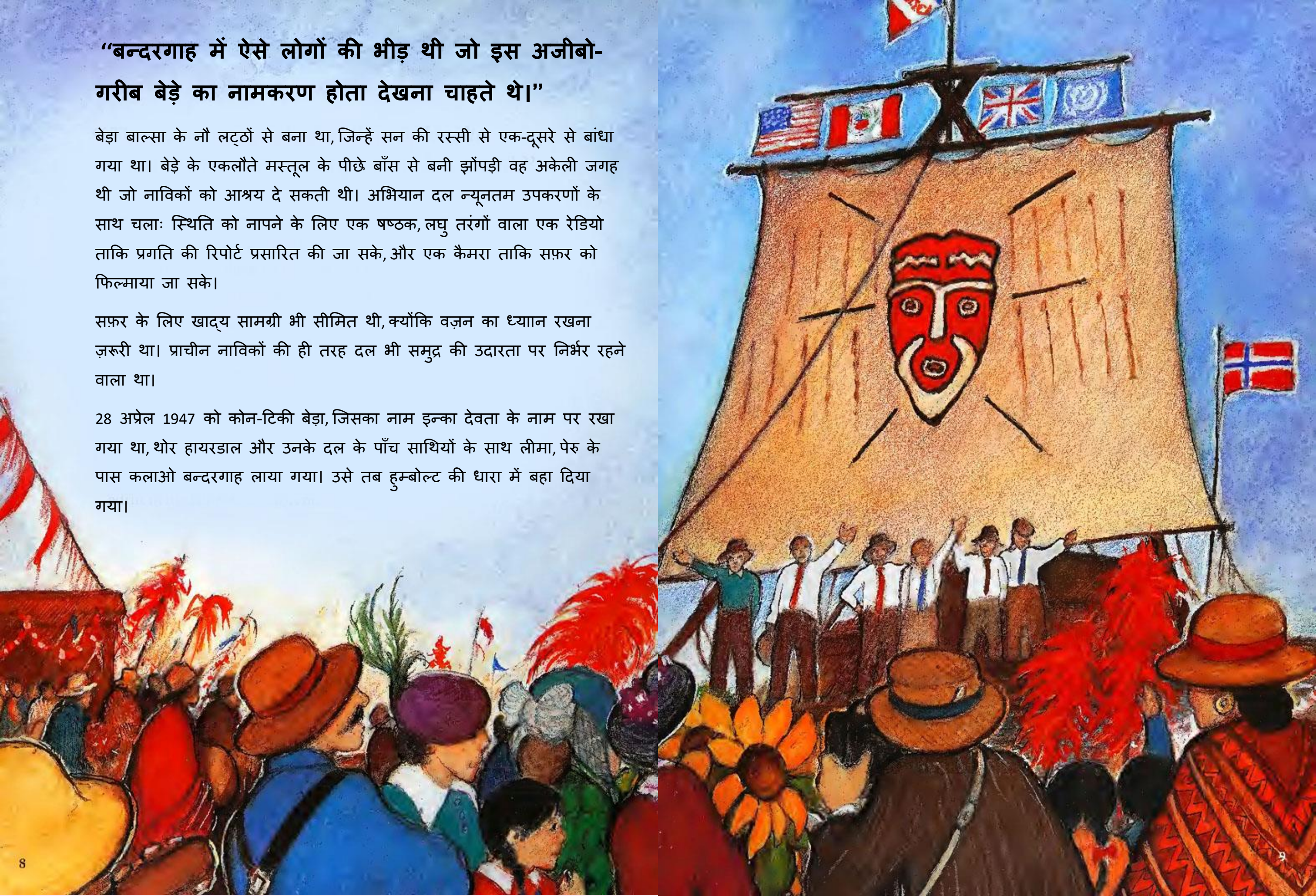


**“बन्दरगाह में ऐसे लोगों की भीड़ थी जो इस अजीबो-गरीब बेड़े का नामकरण होता देखना चाहते थे।”**

बेड़ा बाल्सा के नौ लट्ठों से बना था, जिन्हें सन की रस्सी से एक-दूसरे से बांधा गया था। बेड़े के एकलौते मस्तूल के पीछे बाँस से बनी झोंपड़ी वह अकेली जगह थी जो नाविकों को आश्रय दे सकती थी। अभियान दल न्यूनतम उपकरणों के साथ चला: स्थिति को नापने के लिए एक षष्ठक, लघु तरंगों वाला एक रेडियो ताकि प्रगति की रिपोर्ट प्रसारित की जा सके, और एक कैमरा ताकि सफ़र को फिल्माया जा सके।

सफ़र के लिए खाद्य सामग्री भी सीमित थी, क्योंकि वज़न का ध्यान रखना ज़रूरी था। प्राचीन नाविकों की ही तरह दल भी समुद्र की उदारता पर निर्भर रहने वाला था।

28 अप्रैल 1947 को कोन-टिकी बेड़ा, जिसका नाम इन्का देवता के नाम पर रखा गया था, थोर हायरडाल और उनके दल के पाँच साथियों के साथ लीमा, पेरु के पास कलाओ बन्दरगाह लाया गया। उसे तब हुम्बोल्ट की धारा में बहा दिया गया।





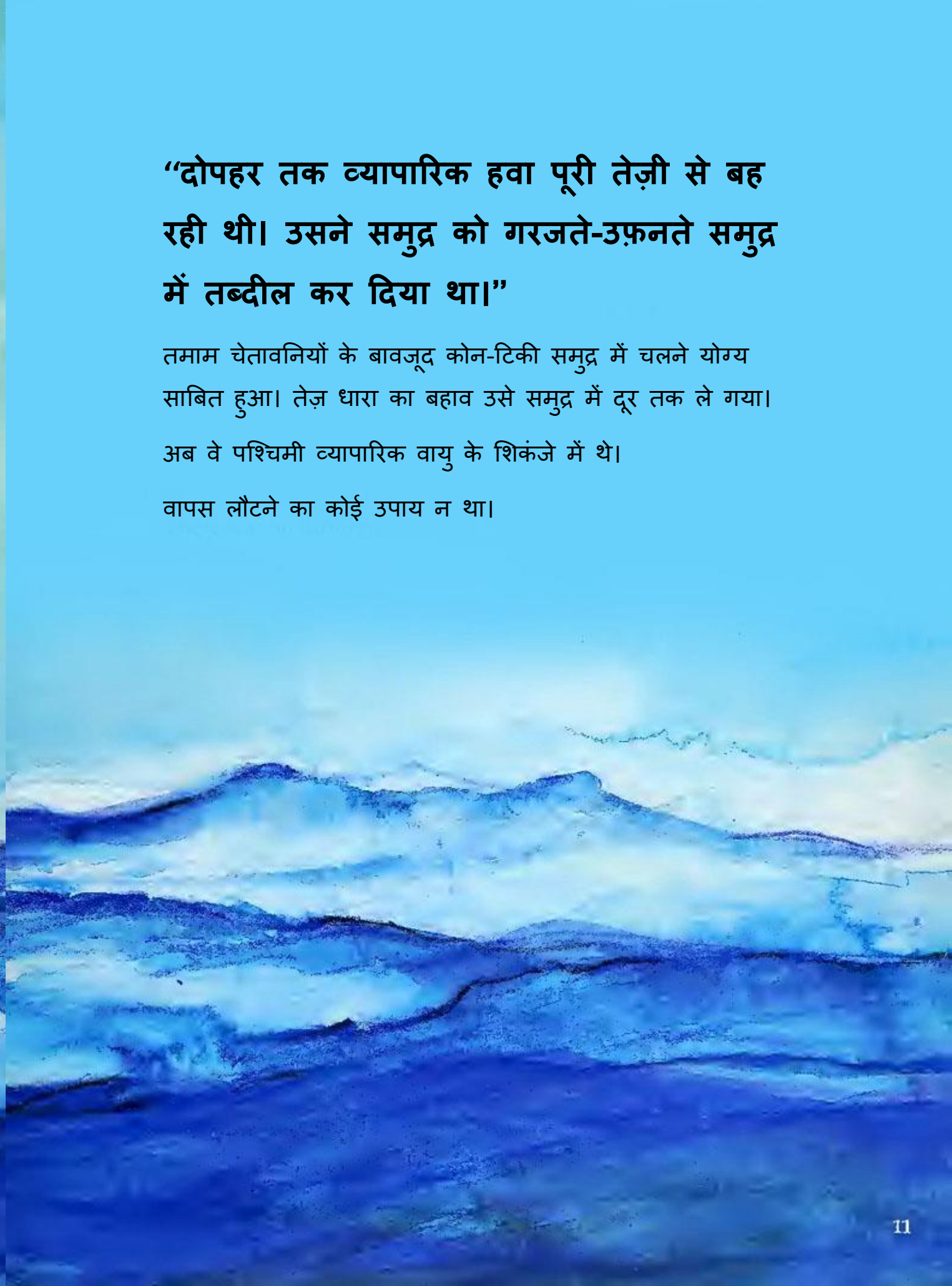


**“दोपहर तक व्यापारिक हवा पूरी तेज़ी से बह रही थी। उसने समुद्र को गरजते-उफ़नते समुद्र में तब्दील कर दिया था।”**

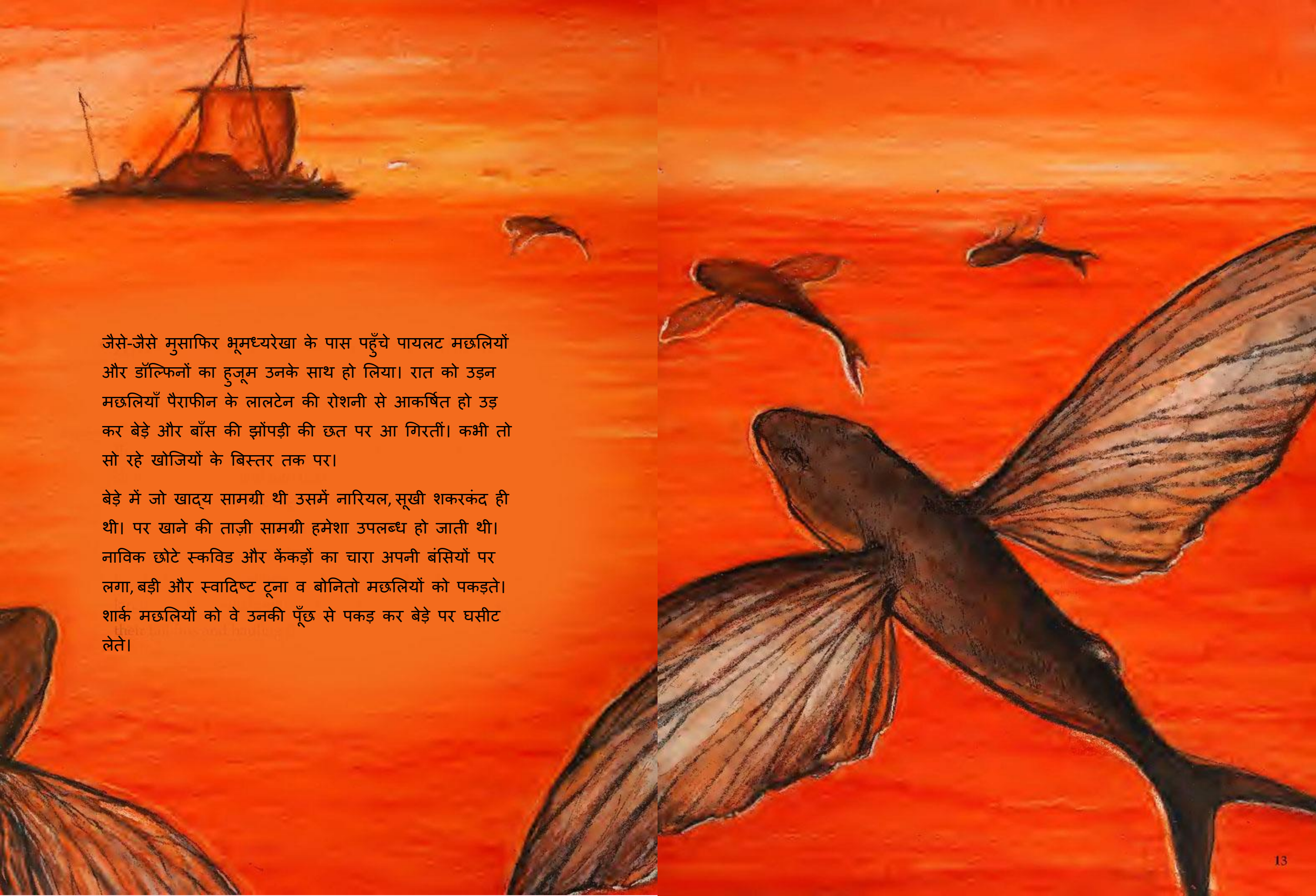
तमाम चेतावनियों के बावजूद कोन-टिकी समुद्र में चलने योग्य साबित हुआ। तेज़ धारा का बहाव उसे समुद्र में दूर तक ले गया।

अब वे पश्चिमी व्यापारिक वायु के शिकंजे में थे।

वापस लौटने का कोई उपाय न था।







जैसे-जैसे मुसाफिर भूमध्यरेखा के पास पहुँचे पायलट मछलियों और डॉल्फिनों का हुजूम उनके साथ हो लिया। रात को उड़न मछलियाँ पैराफीन के लालटेन की रोशनी से आकर्षित हो उड़ कर बेड़े और बाँस की झोंपड़ी की छत पर आ गिरतीं। कभी तो सो रहे खोजियों के बिस्तर तक पर।

बेड़े में जो खाद्य सामग्री थी उसमें नारियल, सूखी शकरकंद ही थी। पर खाने की ताज़ी सामग्री हमेशा उपलब्ध हो जाती थी। नाविक छोटे स्कविड और कैंकड़ों का चारा अपनी बंसियों पर लगा, बड़ी और स्वादिष्ट टूना व बोनितो मछलियों को पकड़ते। शार्क मछलियों को वे उनकी पूँछ से पकड़ कर बेड़े पर घसीट लेते।



**“हमें कोई जहाज़ या दुर्घटना के बाद उसके बहते हिस्सों का कोई संकेत न दिखा, जो यह बताता कि दुनिया में दूसरे लोग भी हैं।”**

कोन-टिकी का अस्तित्व मानो उसकी अपनी ही छोटी-सी दुनिया में था। थोर हमेशा सफ़र को फिल्माने और उसके वर्णन को दर्ज करने में लगे रहते। उनके बचपन का दोस्त एरिक हैसलबर्ग दल का एकमात्र प्रशिक्षित नाविक था, सो नौचालन उनकी ज़िम्मेदारी थी। हर्मन वॉल्ज़िंगर, इंजीनियर थे, वे उपकरणों की मदद से मौसम और समुद्र को मापा करते। कुंट हाउलैण्ड और टॉरस्टाइन राबी, दोनों ही युद्ध के दौरान रेडियो चालक रह चुके थे। सो वे संप्रेषण का काम करते।

बैंग्ट डेनियलसन खाद्य सामग्री पर नज़र रखते, पर खाना पकाने का काम सब मिल-बांट कर करते थे। यही बेड़े को खेने के बारे में भी सच था। दल का हर सदस्य दिन में दो घंटे और रात में दो घंटे बेड़े को पतवार से खेता।





“अक्सर हवा और समुद्र दिनों-दिन तक बदलते नहीं थे . . . रात की चौकीदारी करने वाला दल का सदस्य झोंपड़ी के दरवाज़े पर बैठा आराम से आसमान के सितारों को ताक सकता था।”

2 जुलाई की मझरात के ठीक पहले थोर रात की पहरेदारी कर रहा था, जब शान्त समुद्र से एक डरावनी लहर ऊपर उठी। थोर सबको चेताने के लिए चीखा ही था कि कोन-टिकी हवा में उछला। पहली लहर के तुरन्त पीछे ही समुद्री फेन के ऊपर से दूसरी विशाल लहर उठी। सभी बेड़े पर टिके रहने को जूझ रहे थे कि तीसरी लहर ने थपेड़ा लगाया।

जिस रफ्तार से समुद्र ने उछलना शुरू किया था, उतनी ही तेज़ी से वह शान्त भी हो गया। वे तीनों लहरें आगे बढ़ गईं और अपने पीछे बुरी तरह से हिले हुए और आशंकित नाविकों को छोड़ गईं। क्या ये आकस्मिक लहरें थीं या आगे आने वाली लहरों की चेतावनी थीं?







## “दो दिनों बाद हमें हमारा पहला तूफान मिला।”

तूफान की शुरुआत घने काले बादलों से हुई, जो दक्षिण से तेज़ी से बढ़े आ रहे थे। आँधी की तेज़ हवाएं विभिन्न दिशाओं से झपटें और उन्होंने समुद्र को मथ कर एक गरजते भंवर का रूप दे दिया।

सप्ताह भर कोन-टिकी लहीम-शहीम लहरों और मूसलाधार बारिश से जूझता रहा।







**“हम जब आँधी-तूफान से निकले हमारी  
पतवार टूट चुकी थी और पाल फट चुका था,  
और बेड़े के बीच के फट्टे ढीले पड़ चुके थे।”**

हालाँकि बेड़ा अब भी तैर रहा था, तूफान ने कोन-टिकी को भारी नुकसान पहुँचाया था। बिचले फट्टों के बिना, जो दिशा को नियंत्रित करते थे, बेड़ा हवा और धारा के रहम पर बह रहा था।

पेलिनेशिया का निकटतम द्वीप अब भी तीन सौ समुद्री मील की दूरी पर था। उत्तर-पश्चिम में फाटू हीवा और मार्केसस थे, दक्षिणपश्चिम में टुआमाटू द्वीप समूह। इन दो द्वीपमालाओं के बीच पसरा था विशाल खुला समुद्र।

थोर और उनके साथियों को कतई अंदाज़ नहीं था कि हवा का वेग उन्हें कहाँ बहा कर ले जाएगा।



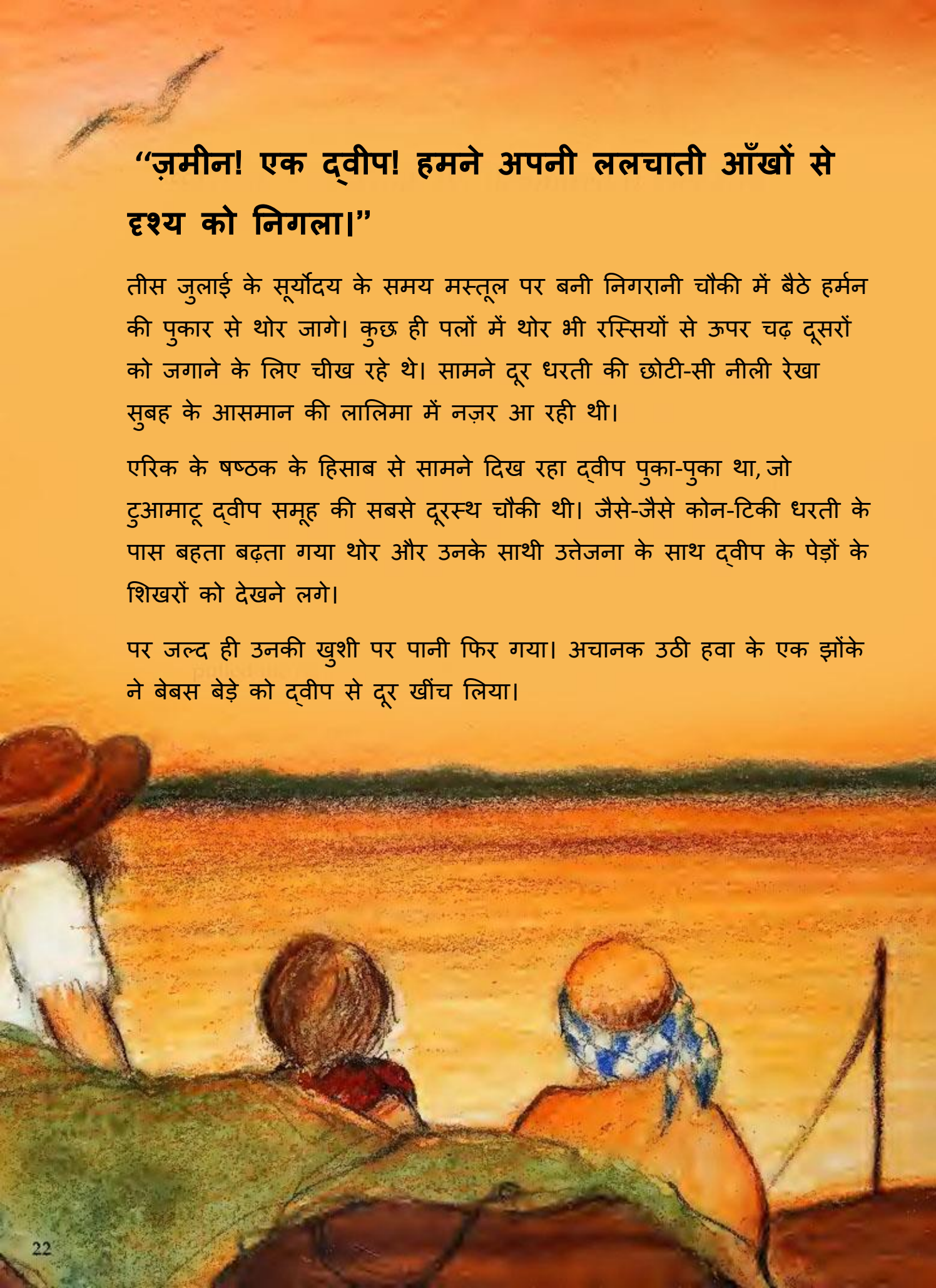


**“ज़मीन! एक द्वीप! हमने अपनी ललचाती आँखों से  
दृश्य को निगला।”**

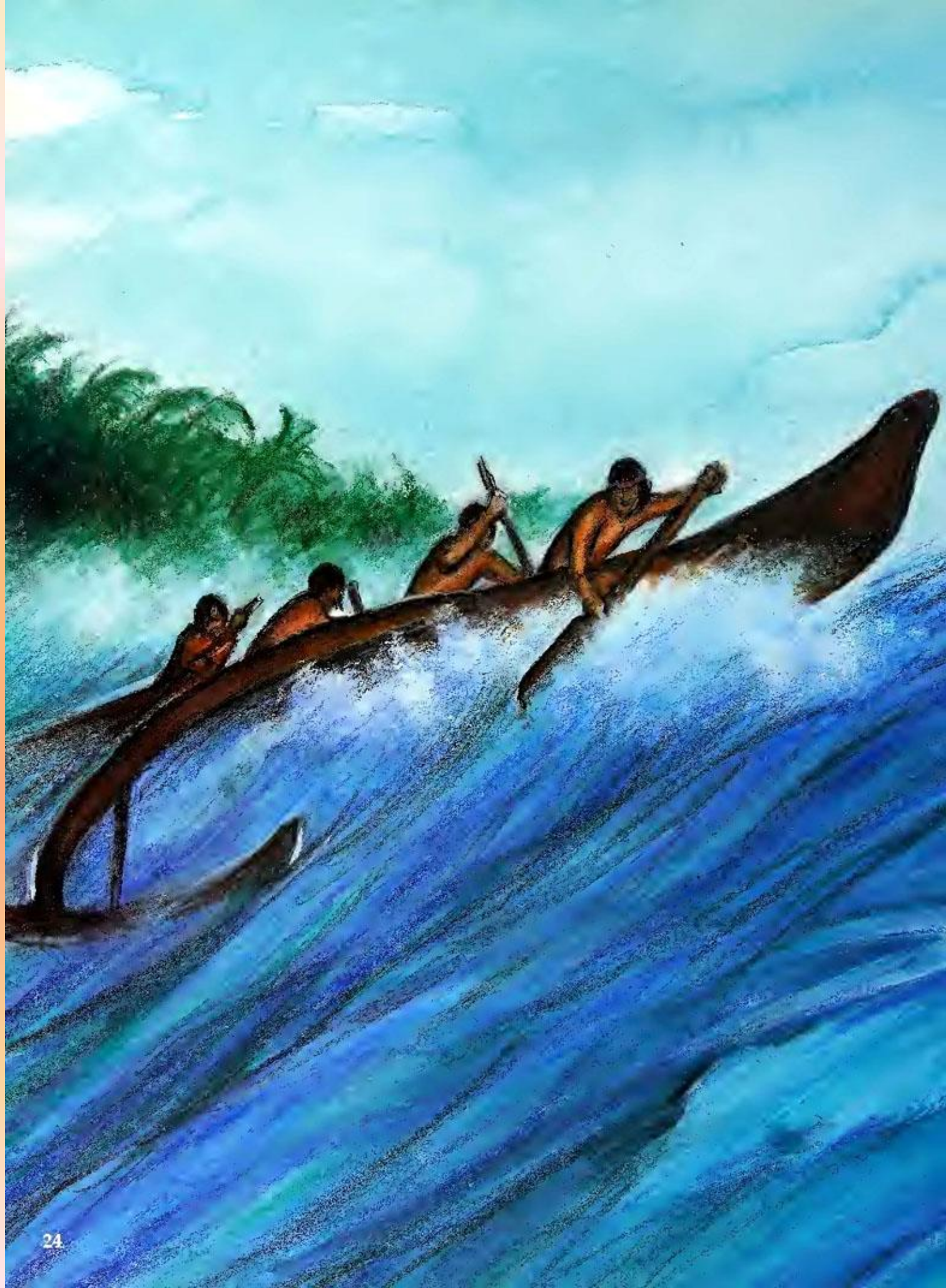
तीस जुलाई के सूर्योदय के समय मस्तूल पर बनी निगरानी चौकी में बैठे हर्मन की पुकार से थोर जागे। कुछ ही पलों में थोर भी रस्सियों से ऊपर चढ़ दूसरों को जगाने के लिए चीख रहे थे। सामने दूर धरती की छोटी-सी नीली रेखा सुबह के आसमान की लालिमा में नज़र आ रही थी।

एरिक के षष्ठक के हिसाब से सामने दिख रहा द्वीप पुका-पुका था, जो टुआमाटू द्वीप समूह की सबसे दूरस्थ चौकी थी। जैसे-जैसे कोन-टिकी धरती के पास बहता बढ़ता गया थोर और उनके साथी उत्तेजना के साथ द्वीप के पेड़ों के शिखरों को देखने लगे।

पर जल्द ही उनकी खुशी पर पानी फिर गया। अचानक उठी हवा के एक झोंके ने बेबस बेड़े को द्वीप से दूर खींच लिया।



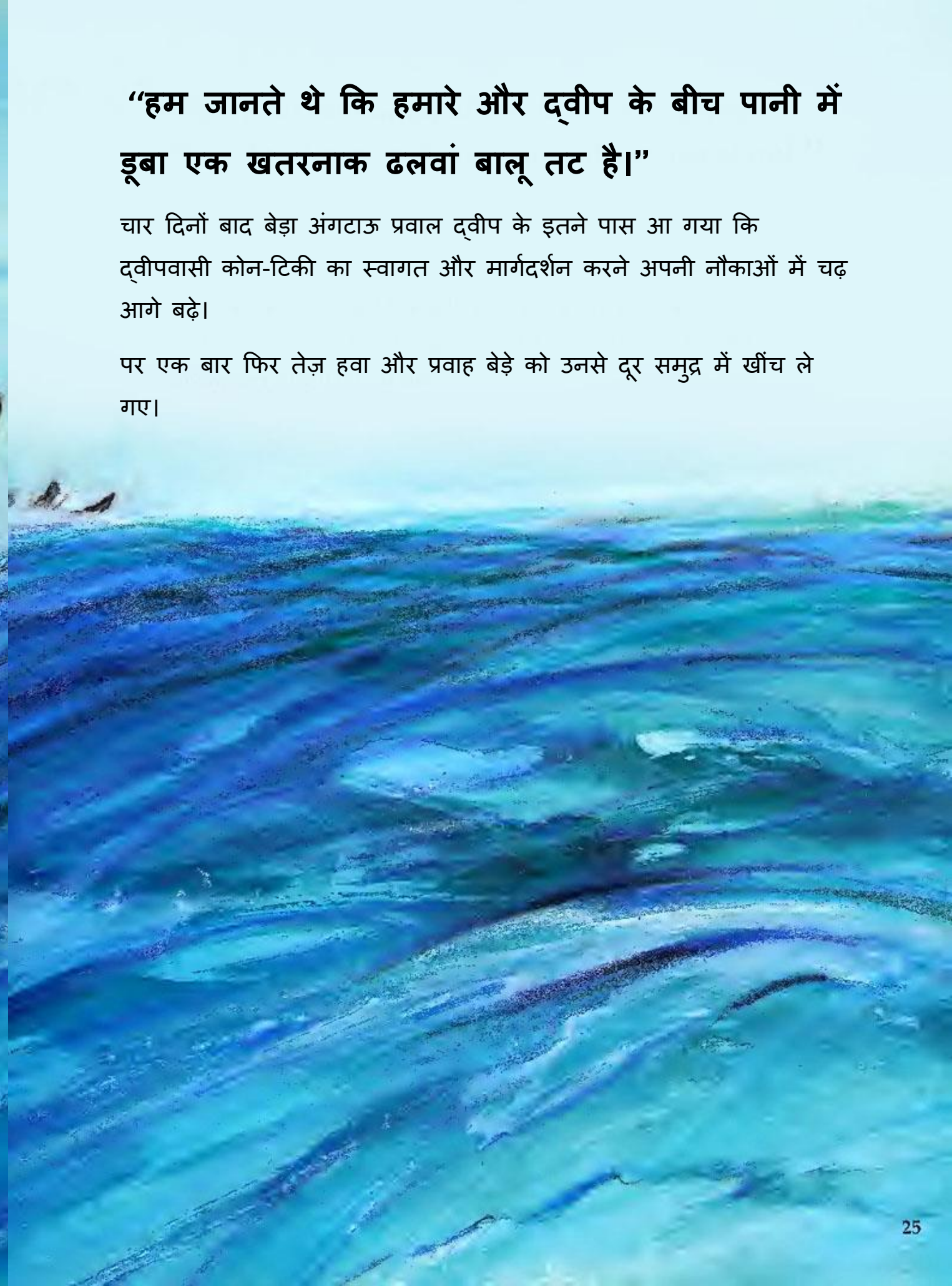




**“हम जानते थे कि हमारे और द्वीप के बीच पानी में  
डूबा एक खतरनाक ढलवां बालू तट है।”**

चार दिनों बाद बेड़ा अंगटाऊ प्रवाल द्वीप के इतने पास आ गया कि  
द्वीपवासी कोन-टिकी का स्वागत और मार्गदर्शन करने अपनी नौकाओं में चढ़  
आगे बढ़े।

पर एक बार फिर तेज़ हवा और प्रवाह बेड़े को उनसे दूर समुद्र में खींच ले  
गए।





**“हम सीधे टाकूमे और रारोइया चट्टानों की ओर बहे जा रहे थे।”**

चट्टानों से टकरा कर बेड़े को टूटने से बचाने का कोई उपाय नहीं था।

दल ने इस दुर्घटना की तैयारी में अपने सारे दस्तावेज जल-रोधी थैलों में भरे। बाँस के झोंपड़े को कैनवास से ढका। टॉरस्टाइन रेडियो पर लगातार प्रसारण करता रहा - इस उम्मीद से कि कोई - कहीं - उनकी आपात्कालीन गुहार को सुनेगा।

सब तैयार थे। हरेक ने एक-एक रस्सी कस कर पकड़ रखी थी। वे बेड़े के टकराने का इन्तज़ार कर रहे थे।



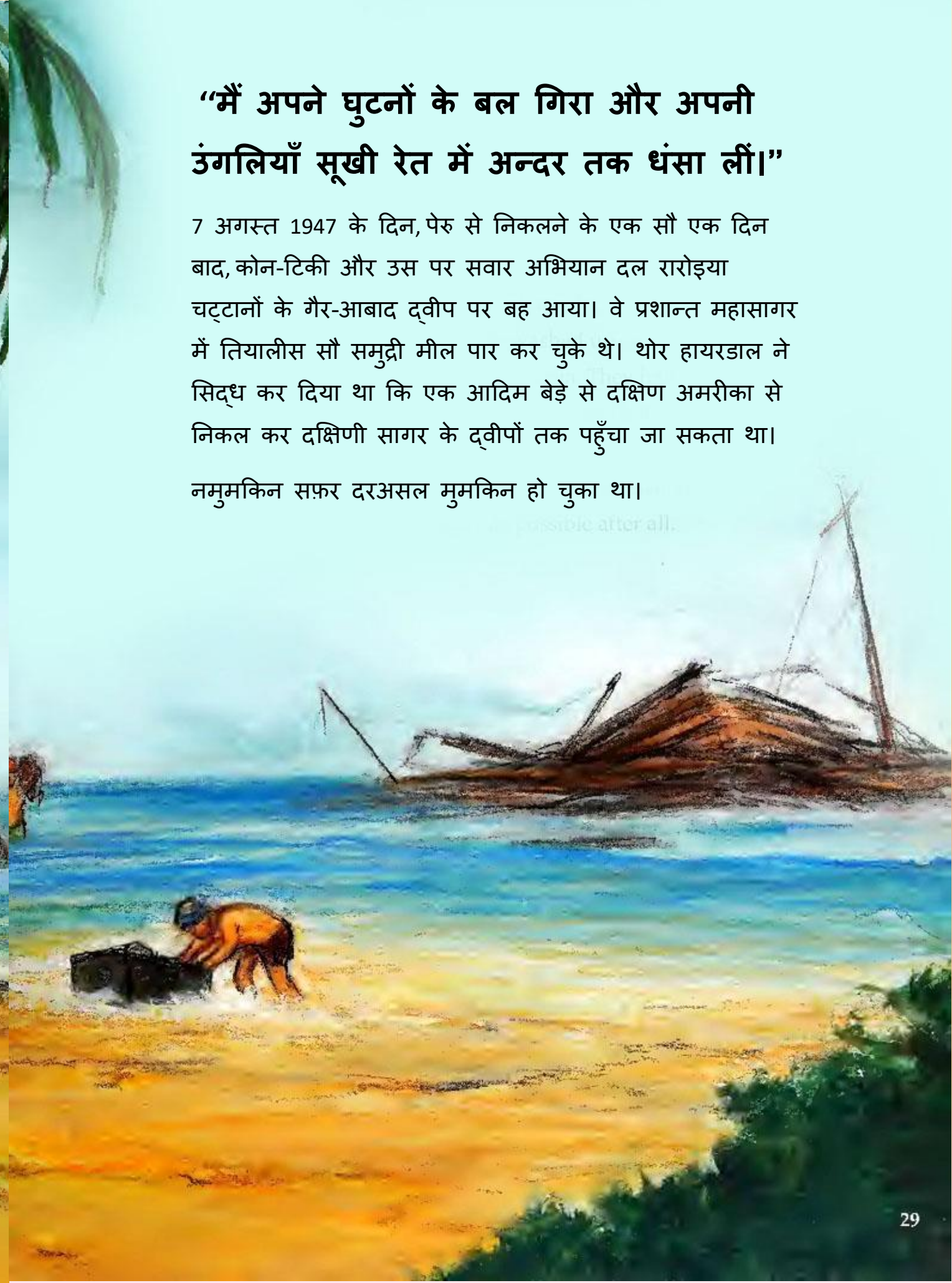




**“मैं अपने घुटनों के बल गिरा और अपनी उंगलियाँ सूखी रेत में अन्दर तक धंसा लीं।”**

7 अगस्त 1947 के दिन, पेरु से निकलने के एक सौ एक दिन बाद, कोन-टिकी और उस पर सवार अभियान दल रारोइया चट्टानों के गैर-आबाद द्वीप पर बह आया। वे प्रशान्त महासागर में तियालीस सौ समुद्री मील पार कर चुके थे। थोर हायरडाल ने सिद्ध कर दिया था कि एक आदिम बेड़े से दक्षिण अमरीका से निकल कर दक्षिणी सागर के द्वीपों तक पहुँचा जा सकता था। नमुमकिन सफ़र दरअसल मुमकिन हो चुका था।

*possible after all.*





## नामुमकिन सफ़र के बाद

29 सितम्बर 1947 को थोर हायरडाल और उनका दल कोन-टिकी के अवशेषों के साथ संयुक्त राज्य अमरीका लौटे, जहाँ उनका नायकों सा स्वागत किया गया।

कोन-टिकी के 'नामुमकिन' सफ़र ने दुनिया भर के लोगों की जिज्ञासा जगाई थी। हायरडाल तथा उनके साथियों ने प्रशान्त महासागर को सफलतापूर्वक पार किया था - 4,300 समुद्री मील का सफ़र, जो ज़मीन पर तकरीबन 5,000 मील की दूरी होती है। 1950 में प्रकाशित थोर की पुस्तक *कोन-टिकी: अक्रॉस द पैसिफिक बाय राफ्ट* एक अंतर्राष्ट्रीय बेस्ट सेलर बनी। बाद में उसका 70 भाषाओं में अनुवाद किया गया, और वह आज तक उपलब्ध है। सफ़र के दौरान उन्होंने जो चलचित्र बनाया था, उसे 1951 में सर्वश्रेष्ठ डॉक्यूमेंटरी का अकादमी पुरस्कार मिला।

इस सबके बावजूद विद्वानों ने हायरडाल के प्रवास संबंधी सिद्धान्त को खारिज कर दिया। वे अपनी यात्रा द्वारा सिद्ध कर चुके थे कि एक आदिम बेड़े से प्रशान्त महासागर पार कर दक्षिण अमरीका से पोलिनेशिया जाया जा सकता है। पर अधिकांश विद्वानों का विश्वास था, और आज भी है, कि पोलिनेशिया के द्वीपों में बसने वाले “पूर्व में एशिया से” प्रवास कर आए थे।

दुनिया के अलग-अलग हिस्सों की आबादियाँ कैसे बसीं संबंधी सिद्धान्तों पर आज भी विद्वानों के बीच बहस जारी है। हालांकि हायरडाल का सिद्धान्त विवादास्पद है, वे अकेले नहीं हैं जो आरंभिक आबादियों के प्रवास पर विश्वास करते हैं। वे नृशास्त्रियों के उस समूह से थे जिन्हें 'डिफ्यूजनिस्ट' यानी प्रसारवादी कहा जाता था। उनका मानना था कि प्राचीन सभ्यताओं के लोग जल व थल मार्ग से दुनिया भर में फैले थे। वैज्ञानिक प्रगति, जैसे डीएनए द्वारा वंशानुगत तत्वों की पहचान कर पाने के बावजूद, यह अब तक निस्संदेह रूप सिद्ध नहीं किया जा सका है कि पोलिनेशिया में आकर सबसे पहले बसने वाले लोग कौन थे।



## थोर हायरडाल के बारे में (1914-2002)



थोर हायरडाल का जन्म 6 अक्टूबर को दक्षिणी नॉर्वे के मछुआरे कस्बे लार्विक में हुआ। थोर की माँ स्थानीय विज्ञान संग्रहालय की अध्यक्षा थीं। वे अपने बेटे को प्रकृति का अध्ययन करने को प्रेरित करती थीं। आठ वर्ष की उम्र तक थोर जंगली पशुओं व कीट-पतंगों को उत्साह से इकट्ठा करने लगे थे। वे एक खोजी बनने का सपना देखा करते थे।

18 वर्ष की आयु में थोर हायरडाल ओस्लो विश्वविद्यालय में पढ़ने गए, जहाँ उन्होंने जीवविज्ञान को मुख्य विषय चुना और स्नातक किया। स्नातक अध्ययन पूरा करने के पहले उन्होंने एक साल पोलिनेशिया के द्वीप फाटू हीवा में बिताया। स्थानीय वनस्पतियों व पशु जीवन की शोध करने के दौरान उनकी रुचि इस प्रश्न में जगी: द्वीपवासी कहाँ से और कैसे पोलिनेशिया के द्वीपों में आए। ये सवाल उन्हें कोन-टिकी द्वारा समुद्री सफ़र करने तक ले गई। इसी के साथ एक नृशास्त्रीय खोजी के रूप में उनके काम की शुरुआत भी हुई।

कोन-टिकी अभियान के खत्म होने के बाद हायरडाल ने एक और अभियान का नेतृत्व किया जो इस्टर द्वीप की 'जायन्ट हैड' (विशाल सिरों वाली मूर्तियों) की पड़ताल का था (1955-56)। इसके बाद दो अभियान उन्होंने यह सिद्ध करने के लिए किए कि प्राचीन मिस्रवासी पेनिरस के सरकंडों से बनी नौकाओं का उपयोग किया करते थे ('रा' व 'रा द्वितीय' 1969-70)। उन्होंने सरकंडों से बनी नौका के सहारे टिगरिस से सफ़र किया ताकि वे मध्यपूर्व की सभ्यता संबंधी सवालों के जवाब तलाश सकें। थोर ने ने टुकूमे के पास पेरु के अवशेषों का उत्खनन भी किया (1988)।

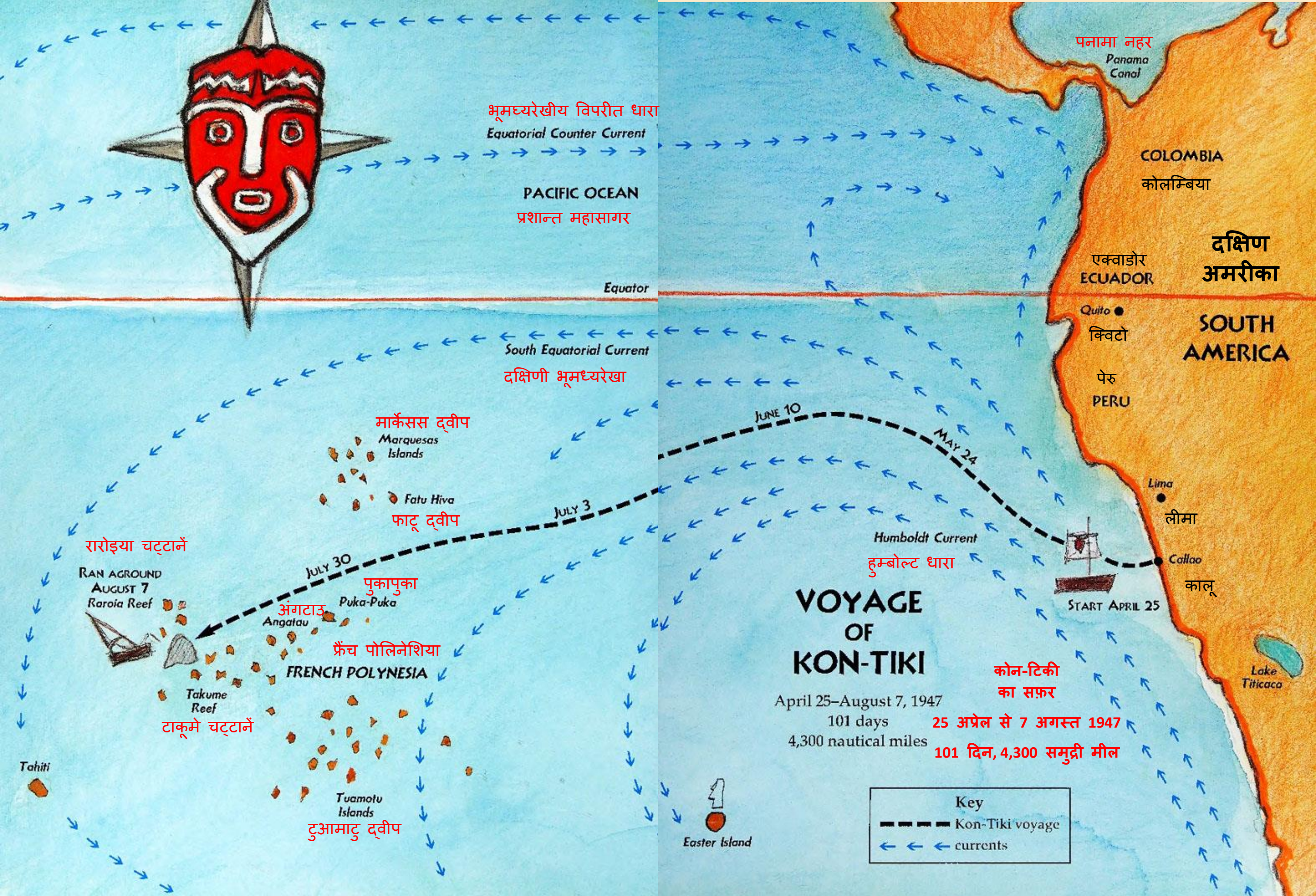
हायरडाल ने अपने अभियानों के हिस्से के रूप में न केवल अतीत के बारे में प्रश्न उठाए बल्की भविष्य के बारे में सवाल भी उठाए। वे उन पहले लोगों में शुमार थे जिन्होंने समुद्रों में प्रदूषण के संबंध में चेतावनी दी। अपने लेखन, भाषणों व संयुक्त राष्ट्र संघ के साथ अपने काम के द्वारा जनता को जागरूक करने की चेष्टा की ताकि इस गंभीर समस्या का समाधान तलाशा जा सके। दूसरों से कहीं पहले उन्होंने हमारे ग्रह के पारिस्थितिकीय नुकसान को पहचाना। उन्होंने मौजूदा और भावी पीढ़ियों के लिए हरित विश्व की पैरवी की।

उनका आजीवन यह विश्वास रहा: लोगों को प्रकृति के साथ काम करना चाहिए, उसके विरुद्ध नहीं।

हायरडाल ने अपने अंतिम वर्ष कैनरी द्वीप के टैनरीफ में बिताए, जो अफ्रीका के तट के पास है। उन्होंने अपनी आत्मकथा *इन द फुटस्टैप्स ऑफ एडम* (2000) लिखी, जो अब भी अंग्रेज़ी में उपलब्ध है। उनकी अंतिम परियोजना प्रशान्त महासागर क्षेत्र में लौट कर पोलिनेशिया के लोगों पर और शोध करने की थी।

उनकी मृत्यु मस्तिष्क कैंसर से 18 अप्रैल 2002 में, सत्तासी वर्ष की आयु में हुई।





भूमध्यरेखीय विपरीत धारा  
Equatorial Counter Current

PACIFIC OCEAN  
प्रशान्त महासागर

Equator

South Equatorial Current  
दक्षिणी भूमध्यरेखा

मार्केसस द्वीप  
Marquesas Islands  
फाटू द्वीप  
Fatu Hiva

रारोइया चट्टानें

RAN AGROUND  
AUGUST 7  
Raroia Reef

पुकापुका  
Puka-Puka

अंगटानु  
Angatau

फ्रेंच पोलिनेशिया  
FRENCH POLYNESIA

Takume Reef

टाकूमे चट्टानें

Tahiti

Tuamotu Islands

टुआमाटु द्वीप



Easter Island

पनामा नहर  
Panama Canal

COLOMBIA  
कोलम्बिया

दक्षिण  
अमरीका

SOUTH AMERICA

एक्वाडोर  
ECUADOR

क्विटो  
Quito

पेरु  
PERU

लीमा  
Lima

कालू  
Callao

START APRIL 25

Lake Titicaca

# VOYAGE OF KON-TIKI

April 25–August 7, 1947  
101 days  
4,300 nautical miles

कोन-टिकी का सफ़र  
25 अप्रैल से 7 अगस्त 1947  
101 दिन, 4,300 समुद्री मील

Key	
— — — — —	Kon-Tiki voyage
← ← ← ← ←	currents